शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राजस्थान की फड़ लोक कला का अध्ययन

जाह्नवी पाण्डेय (शोधार्थी)
प्रोफेसर चित्रलेखा सिंह (संकायाध्यक्ष)
मानविकी सामाजिक एवं ललित कला संकाय
मेवाड़ विश्वविद्यालय
गंगरार, चित्तौड़गढ़, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

राजस्थान अपनी लोक कलाओं के लिए दुनिया में प्रसिद्ध है। यहाँ के हरेक क्षेत्र की लोक कला विशेष महत्व रखती है। राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में फड़ लोक कला में सभी कलाओं का समावेश है। भोपा जनजाति की विरासत फड़ में कला, संगीत और साहित्य का समावेश है। कलाकार इसे फड़ पर चित्रित करते हैं और गीतों में इसका वर्णन करते हैं। यहाँ के कलाकारों ने इसे सैकड़ों वर्षों से सहेज कर रखा है। प्रस्तुत शोध पत्र में फड़ लोक कला की आधुनिक परम्परा का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

राजस्थान को लोक कला की खान कहा गया है, क्योंकि यहां पर अनेक लोक कलाएं हैं और हर एक लोक कला अपने-अपने क्षेत्र में विशेष महत्व रखती है। इन्हीं लोक कलाओं में से एक फड़ कला है। इसके बारे में कहा जाता है कि इस

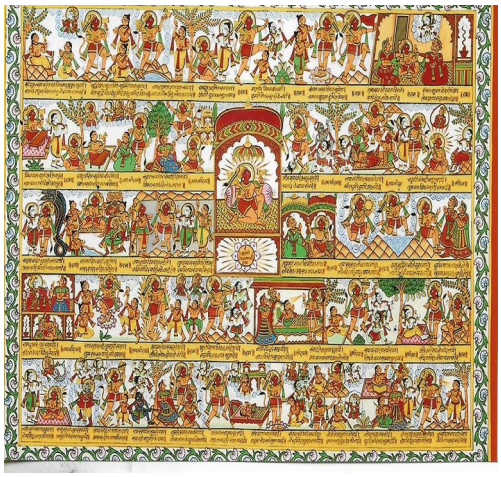

शैली का जन्म लगभग 700 वर्ष पूर्व मेवाड़ स्कूल की लोक कला शैली के नाम से हुआ है। हर जगह की अपनी एक संस्कृति होती है। एक देश की संस्कृति जब दूसरे देश में जाती है तो दोनों देशों की संस्कृतियों का आपस में आदान-प्रदान होता है। भारत में अकबर का शासन आया तो उस समय संगीत में काफी बदलाव आया। भीलवाड़ा वस्त्र निर्माण और फड़ कला के लिए जाना जाता है। फड़ चित्रकला शाहजहां के शासनकाल में शाहपुरा पहुंची और पिछले 200 वर्षों से भीलवाड़ा में जमी हुई है। फड़ शैली में राजस्थान के लोक देवताओं की शौर्य गाथाओं का तथा उनसे संबंधित घटनाओं का चित्रण किया जाता है।

भारत एक विशाल देश है। इसे जातियों जनजातियों एंव उप जातियों का संग्रहालय माना जाता है। राजस्थान की विभिन्न लोक शैलियों में एक महत्वपूर्ण शैली है फड़। इसकी प्राचीन संस्कृति आज भी लोक के स्वरूपों में खोजी जा सकती है। देखा जाए तो तेरहवीं शताब्दी के बाद राजपूत शैली व मुगल शैली के मिश्रण से मेवाड़ लोक शैली का जन्म हुआ।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

फड़ कला धार्मिक आस्थाओं के प्रतीकों से जुड़ी रही। फड़ में ऐसे लोकनायक हैं जो अपने धर्म से लोक आस्था के केंद्र बनकर देवता स्वरूप पूजे जाने लगे। फड़ कला और महान फड़ चित्रकार स्वर्गीय श्री लालजी जोशी दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं।

लोक देवी देवताओं में सर्वाधिक लोकप्रिय दुर्गापाल जी राठौड़, गोगाजी, देव नारायण जी, दशा माता, महादेव जी, सूरज नारायण, डाडा बाबा जी, भंवरालाल जी, शीतला माता, रामदेव जी आदि हैं। इनकी फड़ लोक मंगल की धार्मिक भावना लिए होती है। राजस्थान में इस लोक कला शैली को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दिलवाने वाले सुप्रसिद्ध चित्रकार श्री लाल जी जोशी हैं। इन्हीं के पूर्वजों द्वारा इस शैली को विकसित किया गया।

फड़ का महत्व

राजस्थान की संस्कृति में फड़ बांचने की विशेष परंपरा है, जो किसी अनिष्ट की आंशका दूर करने हेतु मनौती के रूप में की जाती है। फड़ का वाचन अच्छे स्तर (खुली जगह) या चौपाल पर पूर्ण आस्था और श्रद्धा के साथ किया जाता है। लोक नायकों के जीवन काल में मुख्य घटना को चित्रित करने की परंपरा बहुत प्राचीन है। इससे पूर्व यह चित्र पत्थरों पर बनाए जाते थे, किंतु पत्थरों को इधर-उधर लाने-ले जाने में बहुत कठिनाई होती थी। इसी कारण इन गाथाओं को कपड़े पर चित्रित किया जाने लगा।

देश की स्वतंत्रता के पश्चात् इन चित्रों में भी व्यवासायिक दृष्टि से काफी बदलाव हुआ और इन्हें बाजार की मांग के अनुसार तैयार किया जाने लगा। स्वर्गीय लालजी जोशी के परिवार में श्री अभिषेक जोशी ने फड़ के नवीन चित्रों में वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। ये मूलतः शाहपुरा के हैं।

फड़ में आयताकार कपड़ा होता है। इस पर स्थानीय राजाओं और लोकनायक के जीवन को चित्रित किया जाता है। सूती या रेशमी कपड़े पर लाल, नारंगी और चटक रंगों का प्रयोग कर किनारों पर ठप्पे लगाए जाते हैं। इस कपड़े के दोनों ओर बांस के डंडे लगाए जाते हैं, जिससे एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से ले जाया जा सके।

लोक देवता पाबू जी, रामदेव जी, गोगाजी, देवनारायण जी की जीवन कथा पर आधारित बहुमूल्य फड़ चित्र आज भी जर्मनी फ्रांस ब्रिटेन आदि कई देशों के कला संगहालय एंव भारत के संग्रहालय, कलाकारों के निजी संग्रह में प्रदर्शित हैं। इस कला की विशेषता यह है कि कलाकार

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

फड़ संगीत चित्रों को देखते हुए गायकी करते हैं। फड़ चित्र बनाकर प्रचार-प्रसार करते हैं।

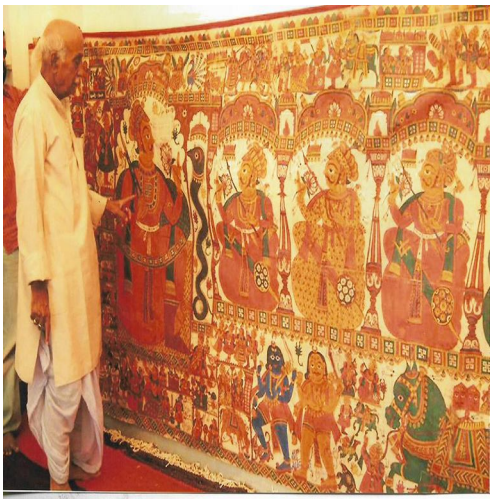

राजस्थानी फड़ संगीत को भोपा और भेपी के द्वारा गया और बजाया जाता है। इसमें भोपा जंतर वाद्य और मार, रावणहत्था आदि वाद्य को बजाकर भोपा नृत्य करता है और भेपी साथ में गाती है। यह फड़ संगीत चोचू बाट अपनी भाषा में पूर्वजों की कहानी गाँव-गाँव में सुनाता है और

रामदेव जी गोगा जी, तेजा जी, पाबू जी की फड़ को बनाते है। उसकी सबसे पहले पूजा आरम्भ करने के पश्चात् उस फड़ चित्रण को देखते हुए गाते-बजाते है।

राजस्थान में ही गौ नृत्य भी बहुत प्रसिद्ध है। अपने -अपने अलग बहरूपिया से भी संगीत को गाते बजाते है। भार जाति के लेाग भी अपने संगीत का प्रचार फड़ संगीत को बांचते थे और गुर्जर जाति के लोग भी देवनारायण को अपना इष्ट देवता मानते थे, जो खुद ही गुर्जर समुदाय के थे।

चोचू बाट के द्वारा बतायी गयी कहानी के अनुसार नाग देवता का चित्र सिर पर छत्र, लम्बी मूंछे, पोशाक पहने हुये इस प्रकार पूरी कहानी को

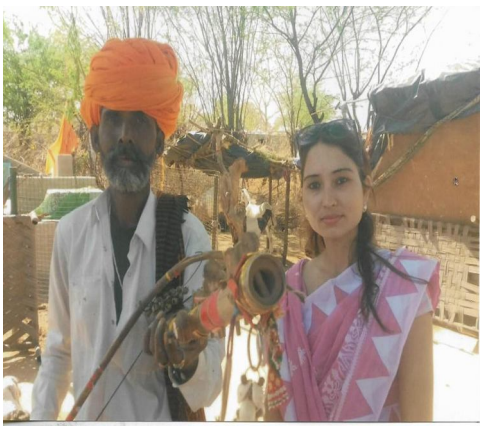

सुनकर हमारे पूर्वज एक रेखा खीचें जो फड़ चित्र के रूप में तैयार हो गयी और उसको देख-देख कर गा-गा गाकर प्रचार प्रसार करने लगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- *मनोज जोशी जी द्वारा साक्षात्कार के अनुसार (राजस्थान चित्तौड़गढ़)*
- *वन्दना जोशी जी द्वारा साक्षात्कार के अनुसार (चित्तौड़गढ़)*
- *अभिषेक जोशी द्वारा साक्षात्कार (शाहपुरा)*
- *कल्याण जोशी जी द्वारा (भीलवाड़ा)*
- *कैलाश जी और मंजू जी (भोपा और भोपी के द्वारा)(चंदेरिया)*